देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का दोबारा ज़िन्दा होना

हज़रत ईसा अल-मसीह का दोबारा ज़िन्दा होना

हज़रत ईसा अल-मसीह हमारे गुनाहों के लिए मसलूब हुए। लेकिन वो मुर्दा नहीं रहें। असल में, हज़रत ईसा अल-मसीह आज भी ज़िन्दा हैं। वो आसमान में, अल्लाह तआला के पास बैठे हैं और उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जब वो वापिस आएँगे और तमाम दुनिया का हिसाबो किताब लेंगे।

सोचो, अगर हम अल्लाह की हुज़ूरी में जाना चाहते हैं, तो वही हमें ले जा सकता है जो पहले से वहाँ बैठा हो।

आज मैं आपको एक वाक़िया सुनाने वाला हूँ — ये हज़रत ईसा अल-मसीह के दोबारा ज़िन्दा होने का वाक़िया है। ये इंजील शरीफ़ में मत्ती 28 में लिखा है।

हज़रत ईसा अल-मसीह इतने ताक़तवर हैं कि मरने के बाद भी फिर से ज़िन्दा हो गये, और अपनी कब्र से बाहर निकले।

देखें, दुनिया में ना जाने कितनी कब्रें हैं, और उनमें औलिया भी दफ़्न हैं। लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह की कब्र खाली है।

आऐं, हम मत्ती 28 को पढ़ते हैं:

इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था।

अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया।

उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद था।

पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुरदा से हो गए।

फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था।

वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था।

और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।"

ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह सहमी हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, "सलाम।" वह उसके पास आईं, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा किया।

ईसा ने उनसे कहा, "मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।"

इस वाक़िये से हमें चार बड़ी सच्चाइयाँ मिलती हैं:

www.talemulkalam.org

पहली सच्चाई: हज़रत ईसा अल-मसीह मौत को हराकर मुर्दों में से जी उठे! तीन दिन बाद, उन पर ईमान रखने वाली औरतें उनकी कब्र पर गईं। वो रोने गई थीं। लेकिन वहाँ उन्हें हज़रत ईसा अल-मसीह ज़िन्दा मिले! लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह मौत से भी ज़्यादा ताकरतवर हैं। इसलिए वो हमें हमेशा की ज़िन्दगी यानी जन्नत में हमैशा की ज़िन्दगी दे सकते हैं।

दूसरी सच्चाई: फ़रिश्ता उनकी ज़िन्दगी की ख़बर देने आया। जैसे जब वो पैदा हुए थे तो फ़रिश्तों ने लोगों को खुशख़बरी दी थी, वैसे ही अब उनकी क़ब्र पर भी फ़रिश्ता उतरा। अल्लाह ताला चाहता था कि सबको मालूम हो जाए कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने मौत पर फ़तह यानी जीत हासिल करली है। आज भी अगर कोई हमेशा की ज़िन्दगी चाहता है, तो उसको चाहिए कि अपने गुनाहों से तौबा करे और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए।

तीसरी सच्चाई: हज़रत ईसा अल-मसीह ने वादा किया था कि उनके शागिर्द उन्हें देखेंगे। और सचमुच उन्होंने देखा! गलील में पहाड़ पर, ग्यारह शागिर्द उनके सामने आए और उन्होंने उन्हें सिज्दा किया। सिर्फ शागिर्द ही नहीं, बल्कि 500 से ज़्यादा लोगों ने उन्हें अपनी आँखों से ज़िन्दा देखा। इतने लोगों ने गवाही दी है कि आज हमें पूरा यक़ीन है — उनका दोबारा ज़िन्दा होना सच और हक़ीकत है।

चौथी सच्चाई: लोगों ने हज़रत ईसा अल-मसीह की इबादत की। औरतों ने भी सज्दा किया। शागिर्दों ने भी सज्दा किया। उनकी पैदाइश पर पूरब से नजूमी लोग आए और उन्होंने सज्दा किया। तूफ़ान थमा तो शागिर्द बोले: "यक़ीनन, आप अल्लाह के बेटे हैं।" इसका मतलब यह नहीं कि वो अल्लाह के जिस्मानी बेटे थे — बल्कि रूहानी बेटे थे, यानी अल्लाह से खास रिश्ते वाले।

मेरे अज़ीज़ो,

हज़रत ईसा अल-मसीह का मक़ाम एक नबी से बढ़कर है। वो कुंवारी औरत से पैदा हुए। उन्होंने लँगड़े को ठीक किया। अंधे को रोशनी दी। मुर्दे को ज़िन्दा किया। और सबसे अहम, उन्होंने अपनी जान हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी के लिए दी। वो दफ़्न हुए। लेकिन फिर से ज़िन्दा हो गये। हज़रत ईसा अल-मसीह वाक़ई इबादत के लायक़ हैं।

मेरी उम्मीद है कि आपने इन बातों से उनकी अज़मत को पहचाना होगा। अगर हाँ, तो वो आज आपको बुला रहे हैं — तौबा करें, ईमान लाऐं, और उनके शागिर्द बन जाऐं।

अगली तालीमात होंगी — हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम के मौज़ू पर होगी।

आगे ज़रूर पढ़ते रहिए।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....